प्रश्न 1 जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखित चन्द्रगुप्त नाटक के नामकरण पर चर्चा करें।

उत्तर भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्य की अधिकांश प्राचीन कृतियों का नामकरण उसके नायक के आधार पर ही हुआ है।

संस्कृत साहित्य में नायक-नायिका दोनों में से एक के आधार पर नाटक का नामकरण की परिपाटी तो है ही साथ ही नायक-नायिका दोनों के सम्मिलित के आधार पर।

प्रसाद जी के अधिकांश नाटक ऐतिहासिक हैं और ऐतिहासिक नाटक का नामकरण नायक या नायिका के आधार पर ही प्रायः होता है। जहाँ तक आलोच्य नाटक की बात है, इनमें भी आर्यत चन्द्रगुप्त का व्यक्तित्व ही छाया हुआ है।

नाटक का नाम ऐसा होना चाहिए जिसके उच्चारण मात्र से नाटक की मुख्य कथा, मुख्य घटना मुख्य पात्र का चित्र-सा खिंच जाए।

नामकरण के औचित्य की परीक्षा कृति के विवेचन के संदर्भ में भी अपेक्षित है। नाटक से नायक का महत्व सर्वोपरि

है क्योंकि कथानक उसीके चतुर्दिक घूमता रहता है। जहाँ तक आलोच्य कृति के नायक की बात है, विद्वानों में मतभेद है। विद्वानों का एक वर्ग आचार्य चाणक्य के नायकत्व का प्रतिपादन करता है जबकि दूसरा वर्ग नाटककार के नामकरण के आधार पर ही प्रस्तुत कृति का नायक चन्द्रगुप्त सिद्ध करता है। अतः यदि चन्द्रगुप्त को नायक मानते हैं तो चाणक्य से उसकी संक्षिप्त तुलना भी अपेक्षित है ताकि यह प्रश्न सुलझ सके। किन्तु प्रसाद की अन्यान्य कृतियों के सन्दर्भ में यदि घटनाचक्र का नियामक है। किन्तु प्रसाद की अन्यान्य कृतियों के संदर्भ में यदि विचार किया जाय तो यही निष्कर्ष निकलता है कि सभी नाटकों का नामकरण प्रसाद जी ने प्रधान पात्र या नायक के आधार पर किया है अतः इस नाटक का नायक भी उन्होंने चन्द्रगुप्त को स्वीकार किया है।

अतः प्रसाद जी की नाटक के नामकरण सम्बन्धी विशेषण प्रवृत्ति के सन्दर्भ में आलोच्य कृति का 'चन्द्रगुप्त' नाम उपयुक्त ही प्रतीत होता है।

—×—